ओ३म्

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 मई 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-११३, वर्ष-१२
वैशाख, विक्रमी २०७६ (मई 2019)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने विभावसुः। स्याम ते सुमतावपि ॥ –ऋ० ६। ३। ४०। ४

व्याख्यान–हे परमात्मन्! आप (वसुः) अर्थात् सबको अपने में बसानेवाले, और सबमें आप बसनेवाले हो। तथा (वसुपतिः) पृथिव्यादि वासहेतुभूतों के पति हो। (कमसि) हे अग्ने विज्ञानानन्द स्वप्रकाशस्वरूप! आप ही सब के सुखकारक और सुखस्वरूप हो। तथा (विभावसुः) सत्यस्वप्रकाशकैधनमय हो। हे भगवन् ! ऐसे जो आप, उन (ते) आप की (सुमतौ) अत्यन्तोत्कृष्ट ज्ञान और परस्पर प्रीति में हम लोग स्थिर हों ॥

सम्पादकीय

लोकतान्त्रिक निर्वाचन में भाषा का अवमूल्यन

पिछले अप्रैल मास से हमारे देश में, जिसे सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश के रूप में जाना जाता हैं, देश की लोकसभा के निर्वाचन का एक महापर्व चल रहा है। पहले हम देखते थे कि- निर्वाचन में मतदान का प्रचार मात्र राजनैतिक दलों के ऊपर निर्भर था, वे ही मतदाता (वोटर) को समझा करके, रिझा करके या फिर ललचा करके मतदान केन्द्र तक लाते थे। किन्तु अब ऐसा नहीं, राजनैतिक दलों के साथ-साथ निर्वाचन आयोग ने भी मतदान हेतु प्रचार पर अरबों रूपया व्यय किया हुआ है, पुनरपि जिस उत्साह से सहज कर्त्तव्यपरायणता के साथ मतदान होना चाहिए, वह न्यून ही दृष्टि-गोचर हो रहा है। इसके साथ ही एक स्मरणीय तथ्य यह भी है कि- ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा मुम्बई जैसे महानगरों में यह और भी न्यून हुआ है, जबकि बंगाल में हिंसा के बीच भी सर्वाधिक मतदान होना यह दर्शाता है कि- वहाँ लोकजीवन में कुछ तो हलचल हो रही है, जिससे परिणाम भी निश्चित ही कुछ भिन्न होने वाले हैं। वैसे तो इस लोकतान्त्रिक प्रणाली में अनेक त्रुटियां हैं, जिसका विचार लोग कम ही करते हैं, किन्तु मतदाता (वोटर) को ललचाना और बहकाना इसके सर्वाधिक त्रुटिपूर्ण तथ्य हैं, जिनके निराकरण के लिए अन्य देशों की तो क्या कहें, हमारे देश में भी कोई उचित व्यवस्था इन बहत्तर वर्षों में नहीं बन पायी है, आगे भी इसका कोई समाधान हो पायेगा, अभी कहा नहीं जा सकता। पुनरपि इतना तो हम कह सकते हैं कि- पूर्व की भांति वर्तमान निर्वाचन कम भयग्रस्त और कुछ-कुछ पारदर्शी भी क्रमशः होता ही जा रहा है किन्तु धनबल व नेताओं की भाषा के परिप्रेक्ष्य में अभी बहुत से प्रतिबन्धों की आवश्यकता है।

दूसरी ओर हम देखते हैं कि पूर्वकाल में राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध लड़े जाते थे, जो सेना जीतती थी उसी के अधिपति को राज्य प्राप्त होता था, किन्तु सदैव से ऐसा भी नहीं था। हमारे इस राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास में राज्य प्राप्ति की अपेक्षा धर्मयुक्त शासन के लिए भी बहुधा युद्ध हुए हैं, जिनमें विजय के उपरान्त भी विजेता राज्य पर अधिकार नहीं करता था, अपितु परास्त किये गये अधर्माचरण से युक्त राजा के किसी धर्माचरणशील व्यक्ति को राज्याधिकार दे दिये जाता था। यथा- श्रीराम और रावण का युद्ध, जिसमें श्रीराम ने सहजभाव से विजित लंका के सम्पन्न वैभवशाली राज्य को धर्माचरणशील विभीषण को ही सौंप दिया। महाभारतकाल में भी अत्याचारी जरासन्ध का वध भीम के हाथों करवाकर श्रीकृष्ण ने उसके धार्मिक पुत्र को सिंहासनारूढ़ किया, किन्तु धीरे-धीरे धर्म गौण हो गया और राज्य सम्पदा प्राप्ति हेतु ही संग्राम होने लगे। अब लोकतान्त्रिक व्यवस्था में वीरतापूर्ण आमने-सामने के युद्ध तो नहीं होते, परन्तु युद्ध की किसी भी अन्य

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

कला-छल, छद्म, कपट, अन्तर्घात, षड्यन्त्रकारी योजना आदि को छोड़ा नहीं जाता है। फिर भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सीधा-सीधा यदि कुछ दिखाई देने वाला है, जो विद्युत संचार माध्यमों (मीडिया) से देखा जाता है तो वह है- **''वाक् युद्ध''**। और इस वाक्युद्ध का सर्वाधिक महत्तवपूर्ण शास्त्र (हथियार) है- भाषा।

हम सभी यह जानते हैं कि-भाषा ही एक ऐसा माध्यम है या प्रभुप्रदत्त सामर्थ्य है जिससे हम अपनी अभिव्यक्ति कर पाते हैं। सभी प्राणियों से हम मनुष्य प्राणियों को यदि विशिष्टता देने वाली कोई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विद्या है, तो वह भाषा ही है। इसलिए वेदाज्ञा भी स्पष्ट है- **''वाचं वदत भद्रया, जिह्वाया अग्रे मधु में, जिह्वामूले मधूलकम्''** आदि। किन्तु वर्त्तमान के राजनैतिक क्षितिज पर, राजनैतिक दलों के शीर्ष नेताओं द्वारा जिस प्रकार की भाषा का अकल्पनीय प्रयोग किया जा रहा है, वह भाषा का अवमूल्यन ही नहीं, अपितु वीभत्सता की पराकाष्ठा है। पूर्व के निर्वाचनों में जैसी भाषा छुटभैय्ये नेता बोलते थे, वही भाषा अब शीर्ष पर विराजमान सभी दलों के नेता बोल रहे हैं, चाहे वे किसी भी संवैधानिक पद पर बैठे हों। और इसमें कोई संशय नहीं कि- इसका प्रयोग जिस प्रकार और जैसा सबसे पुरानी कहलाने वाली पार्टी के अध्यक्ष महाशय ने किया है, ऐसा अद्यावधि देखने-सुनने में न आया था, और फिर क्रिया की प्रतिक्रिया भी गिरती ही चली जा रही है, माननीय प्रधानमन्त्री जी और सत्ताधारी पार्टी के अध्यक्ष महाशय जी ने भी कोई न्यूनता न रख छोड़ी है। जब शीर्ष पर बैठे हुये व्यक्ति ही इस प्रकार का आचरण अपनी भाषा के माध्यम से दर्शा रहे हैं तो फिर अन्यों के तो कहने ही क्या?

सम्भवत: यही सब देखकर राजा भतृहरि जी ने लिखा होगा-
''वारांगनेव नृपनीति रनेक रूपा ॥''

ऋषि सिद्धान्त-

क्या ईश्वर का अवतार भी हो सकता है?

''अज एकपात्'' ''अकायम्'' इत्यादि विशेषणों से परमेश्वर को जन्म मरण और शरीर-धारण-रहित वेदों में कहा है, तथा युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता, क्योंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक अनन्त और सुख-दु:ख दृश्यादि गुण रहित है। वह एक छोटे से वीर्य्य गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है? आता जाता वह है कि जो एकदेशीय हो, और जो अचल, अदृश्य(है और) जिसके बिना एक परिमाणु भी खाली नहीं है, उसका अवतार कहना, जानो वन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है,'' (स.प्र.स.11)

अवतार धारण किये बिना ईश्वर अपने भक्तों का उद्धार और दुष्ट जनों का दमन कैसे कर सकता है?

''प्रथम जो जन्मा है, वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है। जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत् की उत्पत्ति, स्थिति (और) प्रलय करता है, उसके सामने कंस, रावणादि एक कीड़ी के सामान भी नहीं । वह सर्वव्यापक होने से कंस, रावणादि के शरीरों में भी परिपूण हो रहा है, जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव-युक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिये जन्म मरण-युक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल ही नहीं सकती है? और जो कोई कहे कि भक्त जनों के उद्धार करने के लिए (ईश्वर) जन्म लेता हैं। तो भी सत्य नहीं, क्योंकि जो भक्त जन ईश्वर की आज्ञानुकूल चलते हैं, उनके उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है। क्या ईश्वर के पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि जगत् का बनाने, धारण और प्रलय करने रूप कर्मों से कंस रावणादि का वध और गोवर्धनादि पर्वतों का उठाना बड़े कर्म हैं? जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार, करे, तो ''न भूतो न भविष्यति'' ईश्वर के सदृश कोई न है (और) न होगा। और युक्ति ये भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता, जैसे कोई अनन्त प्रकाश को कहे कि वह गर्भ मे आया वा मूठी में धर लिया, ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनन्त और सब में व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आता है और न भीतर जाता, वैसे ही अनन्त सर्व-व्यापक परमात्मा के होने से उसका आना-जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। जाना वा आना वहाँ हो सकता है, जहाँ न हो। क्या परमेश्वर गर्भ में व्यापक नहीं था जो कहीं से आया और बाहर नहीं था, जो भीतर से निकला।''

-(सत्यार्थप्रकाश- स. 7)

राष्ट्र गौरव दयानन्द

-सोनू आर्य, हरसौला

दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।
बाल विवाह, सती प्रथा का था किया विरोध डटकर।
राष्ट्र को आजाद कराया बिस्मिल भगत रुप में कटकर।
दुष्टों व्यभिचारियों के लिए मनुष नहीं, था वो भाला।
दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।
कलयुग में आकर गाया जिसने ब्रह्मचर्य की महिमा को।
आर्यसमाज की स्थापना से बचाया राष्ट्र की गरिमा को।
विष को 14 बार पचाया जिसने था ऐसा वो बलवाला।
दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।
पखण्डियों को दी धूल चटा, पाखण्ड-खण्डनी के वार से।
असत्य का किया विरोध सत्यार्थप्रकाश रूपी तलवार से।
पाखण्डियों के लिए तमस नहीं था वो एक उजाला।
दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।
वेदशास्त्र उपनिषदों को खोजा मेहनत व ज्ञान से।
और परमात्मा को पाया प्राणायाम समाधि ध्यान से।
प्राण दिया प्राणघाती को ही था वो ऐसा दिलवाला।
दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।
कड़ी मेहनत से दिलवाया गौ को संरक्षण।
अकाट्य युक्तियों से कराया बन्द मांसभक्षण।
सोनू आर्य आर्यों से ही है भारत किस्मत वाला।
दयानन्द नाम का था एक मेरी माँ का शेर निराला।
आकर जिसने दुष्टों के सपनों को चूर-चूर कर डाला।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल- आर्य राष्ट्र का आधार

आजकल हल तरफ चुनावी नारों का शोर मचा हुआ है। लोकसभा चुनाव में प्रत्येक दल या उम्मीदवार स्वयं को ही राष्ट्र का सबसे बड़ा हितैषी, शुभचिंतक सिद्ध करने में पूर्ण पुरुषार्थ से जुटा हुआ है। प्रत्येक दल जनता से बड़े-बड़े वादे कर रहा है। राष्ट्र को सम्पन्न, समृद्ध बनाने के दावे प्रस्तुत कर रहा है। परन्तु कोई भी दल यह नहीं बता रहा है कि राष्ट्र का आधार क्या हैं? आखिर वह सिद्धान्त, नीति क्या हैं जिससे राष्ट्र का आधार बनता है, इस पर चर्चा तो छोड़िए कोई सोचने को भी तत्पर नहीं है। हो भी क्यों? यदि राष्ट्र का जनसामान्य राष्ट्र से जुड़े मूल सिद्धान्तों को जान गया तो इन नकली एवं स्वार्थी नेताओं की दुकानें कैसे चलेंगी? परन्तु आइए हम चर्चा करते हैं कि राष्ट्र का मूल आधार क्या है? वास्तव में यदि देखा जाए तो राष्ट्र का मूल आधार है छात्र। आज का छात्र ही कल का अध्यापक, इंजीनियर, डॉक्टर, सैनिक, वकील, किसान, मजदूर, नेता है। जैसा आज का छात्र होगा वैसा ही कल का राष्ट्र का भविष्य होगा। अतः जब राष्ट्र की बात होती है तो बात सीधे-सीधे छात्र की होनी चाहिए, परन्तु दुर्भाग्य है हमारे राष्ट्र का कि यहाँ पर्वत, जमीन, नदियों, सड़कों, दुकानों, मकानों पर तो हंगामा मचा है परन्तु छात्र पर कोई चर्चा नहीं है और इस से बड़ा दुर्भाग्य तो ये है इस राष्ट्र में जो जो छात्रों के प्रतिनिधि संगठन बने बैठे हैं वे सब स्वार्थवश, अज्ञानवश ऐसी विचारधाराओं के समर्थक हैं जो राष्ट्र को विभाजित करना चाहती हैं और कर भी रही हैं। छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी नशे का शिकार हो रहा है। बेरोजगारी का शिकार हो रहा है, जातिवाद फैला रहा है, कहीं झूठी आजादी के नाम पर देशद्रोही नारे लगा रहा है। और महान दुर्भाग्य है शिक्षित होकर भी जीवन लक्ष्य के अभाव में आत्महत्या कर रहा है। परन्तु फिर भी सब मौन हैं, सबको अपने अपने स्वार्थ की चिंता है, राष्ट्र की नहीं, समाधान क्या? समाधान एक ही है-

छात्रों को वैचारिक रूप से, आत्मिक रूप से, मानसिक रूप से सशक्त बनाना। उन्हें वह विद्या प्रदान करना जिसे पाकर वे परिश्रमी, उत्साही, राष्ट्रभक्त, चिंतक एवं चरित्रवान बन सकें। जब हम आर्यावर्त्त की बात करते हैं तथा आर्य निर्माण को इसका आधार मानते हैं जो है भी। तब हमें इसी कड़ी में आर्य छात्र निर्माण पर भी अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा ताकि हम समाज में फैल रहे नास्तिकता, जातिवाद, स्वार्थपन चरित्रहीनता एवं नशे जैसे विषयों से हमारे राष्ट्र के आधार- 'छात्र' की रक्षा कर सकें। राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा इस कार्य में अहर्निश संलग्न है। सब आर्यों के संगठित पुरुषार्थ और आचार्यों के कुशल मार्गदर्शन से आज राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा स्कूल ही नहीं कॉलेजों में भी आर्य विचारधारा का प्रचार-प्रसार कर रही है। ऐसे में आवश्यकता है हम एक सटीक 'रणनीति' बनाकर इस कार्य में जुट जाएं ताकि आने वाला कल 'जय आर्यावर्त्त' के उद्घोष से गूंज उठे। उसके लिए हमें सर्वप्रथम छात्रों को आर्य विचारधारा से जोड़ना होगा जो आर्य प्रशिक्षण सत्र के द्वारा ही सम्भव है। परन्तु यदि बचपन से ही बालक में आर्य विद्या के संस्कार डाल दिए जाएं तो वह छात्र भविष्य में इस आर्य सिद्धान्तों को सहजता से ग्रहण कर सकेगा। आर्य छात्र सभा जून मास में हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर पञ्चदिवसीय गुरुकुलों का आयोजन कर रही है जिनमें बालक को शारीरिक-बौद्धिक प्रशिक्षण तो मिलेगा ही अपितु आर्यत्व के कुछ मूल सिद्धान्तों से भी परिचय होगा जिससे उसके अंदर आर्यत्व की भावना का विकास होगा। आइए हम सब मिलकर संकल्प लें, इस बार अपने पुरुषार्थ में अधिकाधिक छात्रों को इन गुरुकलों में भेजेंगे और आर्य राष्ट्र के आधार आर्य छात्र के निर्माण में सहयोगी होंगे। धन्यवाद!

-अमनदीप आर्य (प्रांतीय अध्यक्ष-हरियाणा) राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
दिल्ली प्रान्त
स्थानः आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81
तिथि- 27 मई से 02 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- आर्य कप्तान-9891501009, आर्य वरुण-9818979812

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-रोहतक
स्थानः लाढोत गुरुकुल, लाढोत
तिथि- 07 जून से 11 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- प्रवीण आर्य-8168567801, आर्य गर्वित-7206907609

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-झज्जर,
स्थानः जूपिटर पब्लिक स्कूल, टोल प्लाजा,दिल्ली रोहतक रोड़, रोहद नगर
तिथि- 2 जून से 6 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- आर्य विकास-9999719004

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-करनाल
स्थानः एस.एस. पब्लिक स्कूल, करनाल
तिथि- 19 जून से 23 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- आर्य प्रदीप जी- 7988902088, आर्य विजय प्रताप जी- 9817238584

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद- चरखी दादरी, भिवानी
स्थानः एस.एल. इन्टरनेशनल स्कूल, गांव जुई, चरखी दादरी
तिथि- 5 जून से 9 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- महिपाल आर्य-9050244802, धर्मवीर आर्य-9416088391

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-हिसार
स्थानः रिद्धनाथ वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गांव बालक (बरवाला) हिसार
तिथिः 6 जून से 10 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- 97290889888, 9812911013, 822209622, 8295170134

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-जीन्द
स्थानः राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, बेरीखेड़ा रोड़, गांव बुढ़ाखेड़ा सफीदों, जीन्द, हरियाणा
तिथिः 13 जून से 17 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- 86848 42014, 98124 92102, 98120 97731

आर्य छात्र — ओम् — आर्य राष्ट्र

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा
पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल
जनपद-कुरुक्षेत्र
स्थानः सावित्रीबाई सीनियर सेकेंडरी स्कूल बबैन (कुरुक्षेत्र)
तिथिः 5 जून से 9 जून 2019
पंजीकरण हेतु सम्पर्क- योगेश आर्य-9812110301, राजेश आर्य-9050604394, साहिल आर्य-8816831211

धर्म और धर्म निरपेक्षता

-आचार्य सतीश

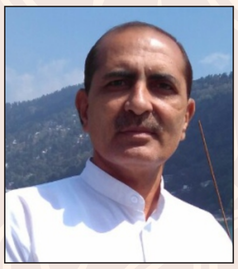

हजारों वर्षों की विदेशी पराधीनता के बाद जब इस देश के लोगों को 1947 में स्वाधीनता मिली तो यहाँ के शासकों द्वारा धर्मनिरपेक्षता की नीति को अपनाया गया। धर्मनिरपेक्षता वास्तव में एक नकारात्मक अवधारणा है। अनेक लोग सोचते हैं कि धर्मनिरपेक्षता तो ठीक है, छद्म धर्मनिरपेक्षता हानिकारक है। ऐसा वही लोग सोचते है जो धर्म व मत-पंथ, मजहब, सम्प्रदाय, रीलिजन, सैक्ट को एक ही मानते हैं, धर्म का अर्थ ठीक से जानते नहीं हैं और धर्म के नाम पर विभिन्न मत-पन्थों को ही धर्म मान लेते हैं। ऐसे ही लोग राष्ट्रवाद को ठीक से न जानकर छद्म राष्ट्रवाद को अपनाते हैं। जब धर्म निरपेक्षता ही सही नहीं है तो छद्म धर्मनिरपेक्षता तो पूर्णत: काल्पनिक विचार है। वास्तव में धर्म का अर्थ ही कर्तव्यपालन, सत्याचरण तथा न्यायसंगत व्यवहार है। अब इससे विमुख हो जाना ही इनसे निरपेक्षता कहलाती है तो फिर धर्मनिरपेक्षता में क्या सकारात्मकता हुई। हाँ, यदि इसे पंथ-निरपेक्षता कहा जाए तो ही उपयुक्त है। लेकिन पिछले सत्तर सालों से देश इसी कर्तव्यहीनता के सिद्धान्तों को अपना कर चल रहा है और धर्म का लोप होता चला जा रहा है। जब मत-पन्थों को ही धर्म मानकर व्यवहार किया जाता रहा तो धर्म को जानने को कोई आवश्यकता ही नहीं समझी गई या यूँ कहे कि उसी को धर्म मान लिया गया।

और उपर से दुर्भाग्य यह है कि स्वतन्त्रता के बाद से लेकर आज तक इस धर्मनिरपेक्षता की नीति ने यहाँ के लोगों को खूब छला है। धर्म का कहीं अता-पता रहा ही नहीं अपितु इसके नाम पर जो व्यवहारिक रूप से पंथ-निरपेक्षता अपनायी गई। उसको भी शासन के द्वारा विपरीत रूप में व्यवहार में लाया गया। अर्थात् जहाँ भिन्न-भिन्न मत पंथों के कर्मकाण्डों से शासन को दूरी बनाकर रखनी थी, वह तो हुआ नहीं अपितु हर प्रकार के कर्मकाण्ड को ही आश्रय देना शुरू कर दिया। इसी का परिणाम यह हुआ कि इन मत-पंथ, महजबों के कर्म-काण्ड चाहे कितने ही अनैतिक, बुद्धिहीनता से प्रेरित या प्राणी मात्र के अहित में ही क्यों न हों उनको भी धर्म मानकर मान्यता दी गई। उसको प्रोत्साहन सरकारों के द्वारा दिया गया और किसी ने उसका विरोध किया तो उसी को धर्म-द्रोही कहा गया तथा उन पंथों का विरोध सहना पड़ा। ऐसे मामलों में जहाँ शासन का कार्य ऐसे व्यक्ति की रक्षा करना था वहाँ भी उसे प्रताड़ित होना पड़ा। उदाहरण के लिए यदि किसी ने धर्म के नाम पर नंगा घूमने को गलत कहा या पशुओं की बलि का विरोध किया तो उसे संतों को अपमानित करने वाला या परम्पराओं का विरोधी कहा गया। जो व्यवहार सामान्य व्यक्ति के द्वारा किया जाने योग्य नहीं अर्थात् कोई सामान्य व्यक्ति उसे समाज में करे तो यह अनैतिक ठहराया जाता है तो वही व्यवहार धर्म का उपदेश देने वाले के लिए कैसे नैतिक होता है। धर्म का उपदेश तो जन-जन के व्यवहार में परिवर्तन के लिए ही होता है, उल्टा यहाँ तो उपदेशक का अनुसरण करने पर सामान्य व्यक्ति के लिए वह व्यवहार अनैतिक हो जाता है तो फिर उपदेशक के लिए वह उचित कैसे? इसी प्रकार किसी पशु से सामान्य कार्य लेना उस पर अत्याचार माना जाता है और उसकी बलि चढ़ाने को धर्म के नाम पर परम्परा, यह कैसे? यह सब सम्भव इस धर्मनिरपेक्षता को अपनाने के कारण हुआ है। धर्म को ठीक से न समझकर उसके स्थान पर मजहब या रीलिजन को ही धर्म मान लेना तथा परम्पराओं को ही धर्म का अंग मान लेने का ही परिणाम है यह।

धर्म का प्रत्येक क्रिया-क्लाप या पहलू तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। यदि वह तर्क, विज्ञान व सृष्टि-क्रम के विपरीत है तो वह धर्म का अंग नहीं है, वह केवल व्यक्ति की आस्था है। आस्था व्यक्ति या समूह के ज्ञान, क्षमता, रूचि आदि पर निर्भर करती है। आस्था धर्म नहीं है। आस्था काल्पनिक भी हो सकती है, यथार्थ में भी हो सकती है। अत: भिन्न-भिन्न मतों व उनके प्रवर्तकों द्वारा स्थापित आस्थाएं आवश्यक नहीं कि वे धर्म के अनुसार हों। उनके द्वारा स्थापित परम्पराएं धर्म के विपरीत भी हो सकती हैं। वह उनका अपना दृष्टिकोण है जो उनके द्वारा अर्जित ज्ञान, उस काल की परिस्थिति व उनके अपने उद्देश्यों पर निर्भर करता है। वे सब परिवर्तनीय हैं और बदलते रहते हैं। धर्म शाश्वत है, उसके सिद्धान्त मानव के उत्थान के लिए हर काल में उतने ही उपयोगी व आवश्यक हैं। वह परिवर्तित नहीं होता है, धर्म सर्वदा उसी रूप में रहता है। धर्म एक ही है और वह धर्म के नाम से ही जाना जाता है। उसके साथ किसी नाम को जोड़ते ही वह उस मत का विचार बन जाता है और धर्म का कोई पर्यायवाची भी नहीं है। धर्म केवल धर्म है, उसके विपरीत जो है वह अधर्म कहलाएगा न कि धर्म की विभिन्न श्रेणी माना जाएगा। धर्म की श्रेणियाँ नहीं होती हैं। मत-मजहब में धर्म और अधर्म मिश्रित होता है और प्रत्येक मत में उसकी मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। अत: धर्म को अपनाएँ, मिश्रण से बचें, अधर्म से बचें।

ये धर्मात्मा, विद्वान् लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षदि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब संसार को सुख पहुँचाते हैं और शोक है उनपर जोकि इनसे विरूद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए वर्त्तमान हैं। **-ऋषि दयानन्द**

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	04 मई	दिन-शनिवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	18 मई	दिन-शनिवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-विशाखा
अमावस्या	03 जून	दिन-सोमवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-रोहणी
पूर्णिमा	17 जून	दिन-सोमवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

[विद्या-प्राप्ति का क्रम]

(प्र०) विद्या को किस-किस क्रम से प्राप्त हो सकते हैं?

(उ०) शुद्ध वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक, विद्वानों का संग, विषयकथाप्रसंग का त्याग, सुविचार से व्याकरण आदि [द्वारा] शब्द, अर्थ और सम्बन्धों को यथावत् जानकर, उत्तम क्रिया करके सर्वथा साक्षात् करता जाए। जिस-जिस विद्या के लिए जो-जो साधनरूप सत्य ग्रन्थ हैं, उन-उन को पढ़कर वेदादि पढने के योग्य ग्रन्थों के अर्थों को जानना आदि कर्म शीघ्र विद्वान् होने के साधन हैं।

[विना पढ़े मनुष्यों की दो प्रकार की गति]

(प्र०)-विना पढ़े हुए मनुष्यों की क्या गति होगी ?

(उ०) दो, एक अच्छी और दूसरी बुरी। अच्छी उसको कहते हैं कि जो मनुष्य विद्या पढ़ने का सामर्थ्य तो नहीं रखे, और वह धर्माचरण किया चाहे, तो विद्वानों के संग और अपने आत्मा की पवित्रता [और] अविरुद्धता से धर्मात्मा अवश्य हो सकता है। क्योंकि सब मनुष्यों को विद्वान् होने का तो सम्भव ही नहीं, परन्तु धार्मिक होने का सम्भव सब के लिए है। कि जैसे अपने लिए सुख की प्राप्ति और दु:ख के त्याग, मान्य होने, अपमान के न होने आदि की अभिलाषा करते हैं, तो दूसरों के लिए क्यों न करनी चाहिए?

जब किसी की कोई चोरी, वा किसी पर झूठा जाल लगाता है, तो क्या उसको अच्छा लगता? और क्या जिस-जिस कर्म के करने में अपने आत्मा को शंका लज्जा और भय नहीं होता, वह-वह धर्म किसी को विदित नहीं होता? क्या जो कोई आत्मविरोध, अर्थात् आत्मा में कुछ और वाणी में कुछ भिन्न और क्रिया में विलक्षण करता है वह **अधर्मी;** और जिसके जैसा आत्मा में वैसा वाणी, और जैसा वाणी में वैसा ही क्रिया में आचरण है, वह **धर्मात्मा** नहीं है ? प्रमाण -

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः ।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥१॥

-य० अ० ४० । मं० ३ ॥

अर्थ-(ये) जो (आत्महनः) आत्महत्यारे, अर्थात् आत्मस्थ ज्ञान से विरुद्ध कहने मानने और करनेहारे हैं, (ते) वे ही (लोकाः) लोग (असुर्य्या नाम) असुर अर्थात् दैत्य राक्षस नाम वाले मनुष्य हैं। और ही वे (अन्धेन तमसा वृताः) बड़े अधर्मरूप अन्धकार से युक्त होके जीते हुए और मरण को प्राप्त होकर (तान्) दु:खदायक देहादि पदार्थों को (अभिगच्छन्ति) सर्वदा प्राप्त होते हैं। और जो आत्मरक्षक अर्थात् आत्मा के अनुकूल ही कहते, मानते और आचरण करते हैं, वे मनुष्य विद्यारूप शुद्ध प्रकाश से युक्त होकर देव, अर्थात् विद्वान् नाम से प्रख्यात हैं, वे ही सर्वदा सुख को प्राप्त होकर मरने के पीछे भी आनन्दयुक्त देहादि पदार्थों को प्राप्त होते हैं।

(प्र०) 'विद्या' और **'अविद्या'** किस को कहते हैं ?

(उ०) जिस से पदार्थ को यथावत् जानकर न्याययुक्त कर्म किये जावें, वह **'विद्या'** और जिससे किसी पदार्थ का यथावत् ज्ञान न होकर अन्यायरूप कर्म किये जाएँ वह **'अविद्या'** कहाती है।

(प्र०) 'न्याय' और **'अन्याय'** किस को कहते हैं ?

(उ०) जो पक्षपातरहित सत्याचरण करना है वह **'न्याय'**। और जो पक्षपात से मिथ्याचरण करना है, वह **'अन्याय'** कहाती है।

प्रश्न-'धर्म' [और **'अधर्म'**] किसको कहते हैं ?

उत्तर-जो न्यायाचरण, सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको **'धर्म'**। और जो अन्यायाचरण, सब के अहित के काम करने हैं, उनको **'अधर्म'** जानो।

महामूर्ख का दृष्टान्त

एक प्रियदास का चेला भगवानदास अपने गुरु से बारह वर्ष पर्यन्त पढ़ा। एक दिन [उनसे] पूछा कि महाराज! मुझको संस्कृत बोलना नहीं आया।

गुरु बोले-'सुन बे! पढ़ने-पढ़ाने से विद्या नहीं आती, किन्तु गुरु की कृपा से आ जाती है। जब गुरु सेवा से प्रसन्न होता है, तब जैसे कुञ्जियों से ताला खोलकर मकान के सब पदार्थ झट देखने में आते हैं। वे ऐसी युक्ति बतला देते हैं कि हृदय के कपाट खुल जाकर सब पदार्थ-विद्या तत्क्षण आ जाती है। सुन, संस्कृत बोलने की तो सहज युक्ति है।

(भगवानदास)- महाराज जी! वह क्या है? **[गुरु]** संसार में जितने शब्द संस्कृत वा देशभाषा में हों, उन पर एक-एक बिन्दु धरने से सब शुद्ध संस्कृत हो जाते हैं। **[भग०]** अच्छा तो महाराज जी! लोटा, जल, रोटी, दाल, शाक आदि शब्दों पर बिन्दु धरके कैसे संस्कृत हो जाते हैं ? **[गुरु]** देखो लोंटां। जंलं। रोंटीं। दांलं। शांकं। **चेला** बोला-वाह वाह!! गुरु के बिना क्षणमात्र में पूरी विद्या कौन बतला सकता है ? भगवानदास ने अपने आसन पर जाकर विचारके यह श्लोक बनाया-

बांपं आंजां नंमंस्कृंत्यं पंरं पांजं तंथैंवं चं।
मंयां भंगंवांदांसेंनं गींतां टींकां कंरोम्यंहंम्॥

जब उसने प्रात:काल उठकर हर्षित होके गुरु के पास जाकर श्लोक सुनाया, तब तो प्रियदास जी बहुत प्रसन्न हुए कि चेले हों तो तेरे ही समान गुरु के वचन पर विश्वासी, और जो गुरु हों तो मेरे सदृश हो॥

ऐसे मनुष्यों का क्या औषध है बिना अलग रहने के?

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/if=kdk पर जाएं।

वैशाख

20 अप्रैल–18 मई 2019 — ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
					स्वाती कृष्ण प्रतिपदा 20 अप्रैल	विशाखा कृष्ण द्वितीया 21 अप्रैल
अनुराधा कृष्ण तृतीया 22 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्थी 23 अप्रैल	मूल कृष्ण पंचमी 24 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 25 अप्रैल	उत्तराषाढ़ा कृष्ण सप्तमी 26 अप्रैल	श्रवण कृष्ण अष्टमी 27 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण नवमी 28 अप्रैल
शतभिषा कृष्ण दशमी 29 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण एकादशी 30 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 1 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 2 मई	रेवती कृष्ण चतुर्दशी 3 मई	अश्विनी कृष्ण अमावस्या 4 मई	भरणी शुक्ल प्रतिपदा 5 मई
कृतिका शुक्ल द्वितीया 6 मई	रोहिणी शुक्ल तृतीया 7 मई	मृगशिरा शुक्ल चतुर्थी 8 मई	आर्द्रा शुक्ल पंचमी 9 मई	पुनर्वसु शुक्ल षष्ठी 10 मई	पुष्य शुक्ल सप्तमी 11 मई	आश्लेषा शुक्ल अष्टमी 12 मई
मघा शुक्ल नवमी 13 मई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल दशमी 14 मई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल एकादशी 15 मई	हस्त/चित्रा शुक्ल द्वादशी 16 मई	स्वाती शुक्ल त्रयोदशी/ चतुर्दशी 17 मई	विशाखा शुक्ल पूर्णिमा 18 मई	

ज्येष्ठ

19 मई- 17 जून 2019 — ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
ज्येष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 17 जून						अनुराधा कृष्ण प्रतिपदा 19 मई
ज्येष्ठा कृष्ण द्वितीया 20 मई	मूल कृष्ण तृतीया 21 मई	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 22 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 23 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 24 मई	श्रवण कृष्ण षष्ठी 25 मई	धनिष्ठा कृष्ण सप्तमी 26 मई
शतभिषा कृष्ण अष्ठमी 27 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण नवमी 28 मई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण दशमी 29 मई	रेवती कृष्ण एकादशी 30 मई	अश्विनी कृष्ण द्वादशी 31 मई	भरणी कृष्ण त्रयोदशी 1 जून	कृतिका कृष्ण चतुर्दशी 2 जून
रोहिणी कृष्ण अमावस्या 3 जून	मृगशिरा शुक्ल प्रतिपदा 4 जून	आर्द्रा शुक्ल द्वितीया 5 जून	पुनर्वसु शुक्ल तृतीया 6 जून	पुष्य शुक्ल चतुर्थी/ पंचमी 7 जून	आश्लेषा शुक्ल षष्ठी 8 जून	मघा शुक्ल सप्तमी 9 जून
पू॰ फाल्गुनी शुक्ल अष्ठमी 10 जून	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल नवमी 11 जून	हस्त शुक्ल दशमी 12 जून	चित्रा शुक्ल एकादशी 13 जून	स्वाती शुक्ल द्वादशी 14 जून	विशाखा शुक्ल त्रयोदशी 15 जून	अनुराधा शुक्ल चतुर्दशी 16 जून

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

This meeting was attended by Babu Navin Chandra Roy, B. Keshub Chandra sen, munshi Indar Mani of Muradabad, B. Harish Chandra Chinatamani, B. Kanhya Lal Alkhadhari and Sir Sayyad Ahmed. Swamiji proposed that they should have the same set of principles to believe in, and should work on the same lines, but those present could not see how religious differences could be got over. Swamiji's efforts in this direction, therefore, proved abortive.Thwarted thus, Swamiji went to Chandrapur, where a great conference of religions was going to be held with a view ascertaining the truth regarding Dharma. Rev. Mr. Scott and Rev. Parker represented Christianity, while Maulvi Ksim and Syed abdul Mansoor came as representatives of Islam. It was suggested to Swamiji that the Hindus and Moslems should combine and unitedly expose Christianity but he rejected the suggestion, saying. 'The proper thing is that no one in this conference should do anything calculated to harm others. How beneficial will it be if the maulvis, missionaries and ourselves should met in love and investigate the truth." Every moment of his life Swamiji felt that the liberation of humanity lay in resuscitation of Vedic ideals, and in upholding his position he had sometimes the painful duty of exposing false creeds, but it would be wrong to think that he was intolerant and hated those who professes faiths different from his own. This is absolutely clear from what he said at the beginning of his speech in this conference ;"No one should think of victory or defeat, for it is proper for all good men to see that truth prevails. Such remarks as 'the padaris are wrong' or that 'the Muhammadans are false' are apt to lead to quarrel and should be avoided. Wise people should according to their knowledge, declare truth and refute untruth in a language that should not harm the feeling of others. They should avoid speaking ill of one another, and making derogatory remarks like 'I am victorious and you are defeated.' All should give up prejudice, and speak out the truth. No one should, therefore, employ harsh words." The conference lasted for some days. Swamiji created a very good impression by his scholarship and logic but his hope that the Vedic truths should be accepted by those whom he tried to convince by the force of his arguments was as unfulfilled as ever. Bigotry leaves no room for conviction.

After the conference, Swamiji accompanied by Munshi Kanayya Lal Alkhdhari left for Ludhiana, where he reached on 1st March 1877. Here he stayed for a fortnight. Then he came to lahore, and put up in Diwan Rattan Chand's garden. His first two lectures were delivered on April 25 and 26 in the Baoli Sahib and were well-attended. The orthodox people were wild with rage, but the educated classes were filled with admiration.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मुझे इस सत्र के लिए मेरे भाई परमेश आर्य ने प्रेरित किया। मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। यहाँ आने से पहले मेरे मन में बहुत संशय थे। धर्म को लेकर, भगवान को लेकर, मूर्ति-पूजा को लेकर। लेकिन इस दो दिन के सत्र ने मेरी सारी समस्याएँ हल कर दी। हर एक चीज के बारे में आचार्य जी ने बहुत अच्छे से समझाया। ये दो दिन मेरे जीवन के सबसे महत्त्पूर्ण दिन हैं। मैं अपने भाई व आचार्य जी का बहुत आभारी रहूँगा। यहाँ की हर चीज मुझे बहुत अच्छी लगी। अत: मैं यही कहना चाहता हूँ कि मुझे इन दो दिनों में अपने जीवन की सबसे अमूल्य ज्ञान मिला।

मैं भगवन्त आर्य वादा करता हूँ कि मैं आर्य निर्माण के लिए अपना 100 प्रतिशत देने की कोशिश करूँगा। चाहे वो तन से हो, मन से हो या धन से हो।

भगवन्त आर्य, आयु-26 वर्ष, योग्यता-बी.टेक, व्यवसाय- फ्लिपकार्ट कम्पनी, पता- नूँह, जिला मेवात।

यह सत्र मेरे जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तनमय सत्र है। इस सत्र ने मेरे जीवन के विचारभ्रम, पाखण्ड, अज्ञानता को दूर कर दिया है। मैंने आज जाना कि 33 करोड़ नहीं 33 कोटि देवी-देवता होते हैं। धर्म क्या है और क्यों है इसका पालन करूं कैसे? हम एवं हमारा समाज किन कारणों से परतन्त्र हुआ, हम अपने मूल स्वरूप को भूल गए और आज न जाने कितने दु:खों को भोग रहे हैं और 1000 सालों से भोगते आ रहे हैं। अज्ञानतावश हम और हमारा समाज अन्धकार की किस दिशा में जा रहा है, यह ज्ञान अनुभव में आज आया। मेरे जीवन की सर्वप्रथम भ्रान्ति थी कि ईश्वर रुद्र है, शिव है, कृष्ण है, राम है या कुछ और है। यह मेरे जीवन की मिथ्या भ्रान्ति छूट गयी कि ईश्वर ये है और मूर्तियों में लगे रहने से ईश्वर की प्रप्ति होती है।

जब वेद के सिद्धान्त सार्वभौमिक हैं, धारण करने योग्य है, फिर क्यों भटकना? हम जान गये कि भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि कौन हैं। इनकी वास्तविकता क्या है।

कौन है आर्य- क्या आर्य विदेशी हैं, क्या विदेश से आये है ऐसे झूठे षडयन्त्र का भी बोध हुआ। जब हम आर्य थे तो हम विश्व की सर्वोच्च सत्ता थे।

वर्तमान समय में लोगों को प्रेरित करके आर्य सभा के कार्यो से अवगत कराकर, क्षत्रिय सभा के द्वारा आर्यो के कार्यो में दिशा व दशा में छात्रों के उज्जवल भविष्य एवं चरित्र निर्माण में आर्य छात्र सभा की टीम सक्रिय करेंगे। स्टूडेंट यूनियन का आर्य छात्र सभा के साथ मिलकर कार्य करवाना का प्रसाय रहेगा।

प्रियांशु चतुर्वेदी, आयु-20 वर्ष, योग्यता-12 वीं, व्यवसाय- अध्ययन, पता- फ्रैंडस कॉलोनी, गाजियाबाद।

पहले में अंधविश्वास में जीवन जी रही थी। जड़ देवी-देवता अर्थात् मूतियों की पूजा करती थी। परन्तु यहाँ आने के बाद दो दिन की विद्या से मेरी सोच बदली है। यहाँ आकर पता लगा कि ईश्वर क्या है? आत्मा क्या है? धर्म क्या है? आदि-आदि अन्य बातों के बारे में पता चला। मैं अपने राष्ट्र की सेवा कैसे कर सकती हूँ, सेवा में कैसे योगदान दे सकती हूँ यह पता चला। दो दिन की शिक्षा प्राप्त करके मेरी बुद्धि में बदलाव आया है। आज से मुझे क्या करना है, ये मुझे इस सत्र में आकर पता लग गया है।

इस आर्यावर्त्त का अस्तित्व क्या है और ईश्वर की उपासना का पता लगा।

इस सत्र से जुड़ने के बाद मैं अपने दोस्तों, परिवारों को इस आर्य समाज के बारे में बताऊँगी ताकि वो सब भी अंधकार से निकाल से सही मार्ग पर चलें।

ज्योति, आयु-28 वर्ष, योग्यता- स्नातक, पता- गांव औचंदी, दिल्ली।

यह सत्र तो गुणों का भण्ड़ार है। मेरे लिए तो यह अंधकार में प्रकाश के समान है। यहाँ आने से पहले मैं व्यर्थ की समाज की गलत परम्पराओं जैसे- जड़ मूर्ति-पूजा आदि में विश्वास रखती थी लेकिन जब मैं यहाँ आई मैंने अपने ईश्वर और देश सेवा के बारे में जाना, मुझे पता लगा।

ईश्वर की उपाधि को समझा, उसके असली अस्तित्व के बारे में जाना। हमारी प्रधानाचार्य (आचार्या) जी के एक-एक शब्द मेरे लिए अनमोल थे और अब मैं पूर्ण प्रयास करूंगी की मैं वैदिक धर्म को अपना सकूं और वेद धर्म का पालन कर सकूं। मूर्ति-पूजा नहीं करके निराकार ईश्वर की उपासना करूंगी और दूसरों को भी समझाने का प्रयास निरंतर करती रहूंगी।

मैं लोगों को समझाऊँगी और ज्यादा से ज्यादा लोगों को सत्र करवा कर आर्य बनाने में पूर्ण योगदान दूंगी।

हिमांशी, आयु-18 वर्ष, योग्यता-11 वीं, व्यवसाय- अध्ययन, पता- गांव दरियापुर कलां, दिल्ली।

संध्या काल

वैशाख-मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5120, वि. 2076 (20 अप्रैल 2019 से 18 मई 2019)	ज्येष्ठ-मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5120, वि. 2076 (19 मई 2019 से 17 जून 2019)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)	प्रात: काल: 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सायं काल: 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)	सायं काल: 7 बजकर 00 मिनट से (7.15 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।